मनसा सेवा - 2

➢➢ *सच्चे सेवाधारी के लक्षण*

➳ _ ➳ *नम्रचित*

→ *कोई रौब नहीं* रखना

→ *स्वयं झुककर दूसरों को झुकाना*

→ *रूहानी नशा और नम्रता* दोनों साथ साथ होने चहिये

➳ _ ➳ *निर्माण*

→ _नाम, मान शान की कोई इच्छा नहीं_

➳ _ ➳ *निरहंकारी*

→ *अहंकार में सदैव यही इच्छा रहती है की और मान चाहिए... और मान चाहिए*

→ *अहंकारी कभी भी शांत नहीं रह सकता*

➳ _ ➳ *त्याग, तपस्या और वैराग्य*

→ *एक ही समय पर सोना और उठना* - यह भी एक तपस्या है

→ _इन तीनो के अभाव में कोई भी सेवा फलीभूत नहो हो सकती_

→ सेवाएं तो *मन की स्थिति* से होती है

→ *तपस्या करना ही एक सेवा है*

→ *स्वयं के मन को शांत कर देना ही एक सेवा है*

➳ _ ➳ *अपने घर को सेवा स्थान समझना*

→ संकल्प, बोल और कर्म में *सदैव अलोकिक*

→ _बर्तन बर्तन से नहीं टकराएगा_

➳ _ ➳ *निरंतर सेवा का भाव*

➳ _ ➳ *सेवा और योग अलग अलग नहीं*

→ *सेवा के समय योग भी साथ*

→ *योग के समय भी सेवा भी साथ*